5. लोकगीत

I. शब्दार्थ :

कमर	= कटि	गूँज उठना	= प्रतिध्वनित होना
भला	= अच्छा	अटूट	= नाटूटने वाला, दृढ़
मनोरंजन	= मन बहलाने वाला	लोच	= कोमल, लचक ताज़गी
ताजगी	= नया सा	स्त्रियाँ	= औरतें
विधि	= पध्दति	त्योहार	= उत्सव, पर्व
मदद	= सहायता	हेय	= तुच्छ, नीच
उपेक्षा करना	= इनकार करना, तिरस्कार	नजर	= दृष्टि
क्षेत्र	= विभाग, सीमा	परिवर्तन	= बदलाव
प्रकाशित होना	= छपाईहोना	जकड़	= पकड़ कसकर बाँधना
दल	= समूह	जवाब	= उत्तर
दिशा	= ओर, तरफ	देहात	= गांव, ग्राम
चाव	= पसंद से	करीव	= लगभग, आसपास
जंगल	= वन	सीमा	= हद
हास	= हँसी	आरंभ	= शुरुआत
सदा	= हमेशा, सदैव	नट	= अभिनेता
संसार	= दुनिया	राह	= रास्ता
अवसर	= मौका	हवाला	= अधीन
प्रकार	= किस्म	साधारण	= सामान्य
नाच	= नृत्य	जरूरत	= आवश्यकता

Sakshieducation.com

बखान करना	=	वर्णन करना / तारीप करना	संग्रह करना	=	एकत्र करना/ इकट्ठा
ओजस्वी	=	जोश, पैदा करने वाला/ जोशीली	आदि वासियों	=	जनजाति जंगल में रहनेवाले

II. उन्मुखीकरण :

1. मेहंदी है रचने वाली,
   हाथों में गहरी लाली।
   कहें सखियाँ, अब कलियाँ
   हाथों में खिलने वाली हैं।
   तेरे मन को, जीवन को;
   नई खुशियाँ मिलने वाली हैं।

III. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. हाथों में क्या रचने वाली है?

उ. हाथों में मेहंदी रचने वाली है।

प्र.2. इस तरह के गीतों को क्या कहा जाता है?

उ. इस तरह के गीत, लोक गीत कहलाते हैं।

प्र.3. किन संदर्भो में लोकगीत गाए जाते हैं?

उ. ऋतु परिवर्तन, त्योहारो, शादी, पर्वों के अवसरों पर लोकगीत गाए जाते है।

sakshieducation.com

IV. उद्देश्य :

1. छात्रों को निबंध लिखने की प्रेरणा देते हुए निबंध शैली से अवगत कराना भाषा के मनोरंजक रूप से छात्रों की अभि रुचियों, दक्षताओं के साथ-साथ उसका सर्वांगीण विकास करना और लोकगीतों के सृजन के लिए प्रेरित करना इस पाठ का उद्देश्य है।

V. लेखक परिचय :

१. भगवत शरण उपाध्याय हिन्दी साहित्य के सुपरिचित रचनाकर है। इनका जन्म सन 1910 में हुआ। इन्होने कविता, कहानी आदि विधाओं में लेखनी चलाई। हिन्दी साहित्य की रूपरेखा, कालिदास का भारत, ठूँठा आम, गंगा गोदावरी आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ है।

VI. विधा विशेष :

लोकगीत निबंध पाठ है। 'निबंध' का अर्थ है ''बाँधना''। सुंदर और उचित शब्दों के व्दारा भावों की प्रस्तुति निबंध है। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार निबंध ''गद्य की कसौटी है।''

VII. प्रश्न उत्तर :

प्र.1. लोकगीत के बारे में आप क्या जानते है?

उ.लोकगीत विशेषकर ग्रामीण जनता के गीत है। इसे गाँव के घरों में विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है। इसके रचनाकार भी गाँव के लोग ही होते है। लोकगीत अपनी लोच, ताजगीऔर लोकप्रियता मे शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। ये गीत बाजों केमदद के बिना ही साधारण ढोल, करताल और बाँसुरी आदि की मदद से गाए जाते हैं।

प्र.2. लोकगीत और संगीत का क्या संबंध है?

उ.लोकगीत हमारे जीवन के संगीत है। लोकगीत और हमारी संस्कृति का अटूट संबंध है। लोकगीत भावना प्रधान होते है। इसमें सूर-ताल का ध्यान नहीं रखा जाता है।ये शास्त्रीय संगीत से बिलकुल भिन्न है। गीत संगीत के बिना हमारा मन नीरस होजाता है।

प्र.3. 'पहाड़ी' किसे कहते है?

उ. पहाड़ियों के अपने-अपने गीत है। गढ़वाल, किन्नार काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत है। उन्हे गाने की उनकी अपनी-अपनी विधियाँ है। उनका नाम ही **'पहाड़ी'** पड़ गया।

प्र.4. वास्तविक लोकगीत कैसे होते हैं?

उ. वास्तविक लोकगीत देश के गाँवो और देहातों में हैं। ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाए जाते हैं। लोकगीत में बहुत जान होती है। ताजगी इनकी विशेषता है।

प्र.5. बारहमासा लोकगीतो के बारे मे आप क्या जानते है?

उ. बारहमासा गीत में बारह मासों (बारह महीनों) का वर्णन किया जाता है। इस में प्रकृति के विविध रूपो का वर्णन किया जाता है। इन गीतों की प्राकृतिक विरोषता मुख्य होती है।

sakshieducation.com

प्र.6. विदेशिया लोकगीत के बारे में आप क्या जानते हैं?

उ.

भोजपुरी में करीब तीस चालीस बरसों बिदेशिया का प्रचार हुआ। गाने वालों के अनेक समूह इन्हे गाते हुए देहात में फिरते हैं। उधर के जिलों में विशेषकर विहार में विदेशिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं है। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है, परदेशी प्रेमी की और प्रेमिका की बात रहती है, इन गीतो से करुणा और विरह का रस बरसता है।

प्र.7. स्त्रियों के लोकगीत कैसे होते है?

उ. अनंत संख्या अपने देश में स्त्रियों के गीतों की है। वैसे तो ये नदी गीत लोकगीत ही है पर अधिकतर औरते ही इसे सिरजती है। त्योहारों पर, में नहाने जाते समय, विवाह के नटकोड़, ज्योनार के समय संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली, जन्म के समय सौहर आदि सभी अवसरो के अलग-अलग गीत है जो स्त्रियाँ गाती है।

प्र.8. लोकगीत किसके प्रतीक है?

उ. लोकगीत हमारी सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक हैं। गाँव के गीतों में वास्तव में अनंत प्रकार है। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के सोत की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के असंख्यक गानों के प्रतीकहै।

sakshieducation.com

VIII. अर्थग्राह्यता - प्रति क्रिया

अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1. लोकगीत ग्रामीण जनता का मनोरंजक साधन है। कैसे?

उ. गाँव के लोगों का जीवन लोकगीतों में ही बसता है। उनका सुख दुख विरह, आनंद सभी भाव लोकगीतों म देखे जा सकते हैं। गाँव में दिन भर काम करने के बाद चौपाल में शाम के समय बैठते है। वहाँ उनके विविध बोल फूट पड़ते है। लोकगीत के बिना ग्रामीण जनता के जीवन की कल्पना ही नही की जासकती। लोकगीत उनके हृदय में रचे बसे है।

प्र.2. हिंदी या अपनी मातृ भाषा का कोई लोक गीत सुनाइए। (छात्र स्वयं करें)

आ. वाक्य उचित क्रम में लिखिए।

1. **लोकगीत है संगीत सीधे जनता के।**

उ. लोकगीत सीधे जनता के गीत है।

2. **वास्तव में प्रकार अनंत के गीतो के गाँव**

उ. वास्तव में गाँव में अनंत गीतों के प्रकार है।

3. **मदद ढोलक की से स्त्रियाँ है गीती।**

उ. स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती है।

इ. दिया गया गद्यांश पढ़िए और इसके मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार है। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के सोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के असंख्यक गानों के प्रतीक है।

उ. **मुख्य शब्द :** गीत, वास्तव, अनंत, इठला-इठलाकर आनंद, सोतो, उद्दाम जीवन, असंख्यक गानों के प्रतीक।

ई. नीचे दिया गया लोकगीत पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

उ. (छात्रों से कक्षा में करवाएँ)

IX. अभिव्यक्ति - सृजनात्मक :

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. -निबंध में लोकगीतों के किन पक्षों की चर्चा की गई है? इसके मुख्यांश बिंदुओं के रुप में लिखिए।

उ. निबंध में लोकगीतों के निम्न पक्षों की चर्चा की गई है।

* लोकगीत अपनी लोच ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न है।
* लोकगीत सीधे जनता के संगीत है।
* इसके लिए साधना की जरूरत नही होती है।
* इन गीतों में बडी जान होती है।
* जन जातियों के सामूहिक दल के रुप में भी गीत होते है जो अधिकतर बिरह आदि में गाये जाते हैं।
* विदेशिया मे रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है।
* लोकगीत के कई प्रकार है।
* लोकगीत देश के आदिवासियों के संगीत है।

और वे स्वयं इन गीतों की रचनाकार होते हैं।

* लोकगीत में सुरताल, लय का बंधन नही होता।

2. जैसे-जैसे शहर फैल रहे है और गाँव सिकुड रहे है, लोकगीतों पर उनका क्या प्रभाव पड रहा है?

उ. जैसे-जैसे शहर फैल रहे हैं गाँव सिकुडता जा रहा है। लोकगीत में गीतो का रूप बदलता जा रहा है। धीरे-धीरे गाँवों से गीत समाप्ति की ओर बढ़ रहे है। गाँव के लोककलाकार रोजी-रोटी की तलाश में शहर की ओर आ रहे है, लोकगीतों पर शहरोका प्रभाव पड़ने लगा है। ये सभी बाते लोक गीतों के विकास में रोड़ा है।

आ. 'लोकगीत' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ. हमारी संस्कृति में लोकगीत और संगीत का अटूट संबंध है। मनोरंजन की दुनिया में आज भी लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। गीत-संगीत के बिना हमारा मन नीरस हो जाता है। लोकगीत अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं।

लोकगीत सीधे जनता का संगीत है। ये घर, गाँव और नगर की जनता केगीत है इनके लिए साधना की जरूरत नहीं होती। त्यौहारों और विशेष अवसरों पर ये गाये जाते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों ही इनकी रचना के भागीदार है। ये गीत बाजों, ढोलक, करताल, झाँझ और बाँसुरी आदि की मदद से गाये जाते हैं।

लोकगीतोंके कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्यप्रदेश, दक्कन और छोटा नागपुर में ये फैले हुए हैं।

पहाड़ियों के अपने-अपने गीत हैं। वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातोंमें हैं। सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाये जाते हैं। चैता, कजरी,बारहमासा,सावन

आदि मिर्जापुर, बनारस आर उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में गाये जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगला के लोकगीत हैं। पंजाब में महिया गायी जाती है।

राजस्थानी में ढ़ोलामारू आदि गीत गाते हैं। भोजपुर में बिदेसिया का प्रचार हुआ है। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहतो हैं। इन गीतों में करूणा और बिरह का रस बरसता है।

जन जातियों में भी लोकगीत गाये जाते हैं। एक दूसरे के जवाब के रूप में दल बाँधकर ये गाये जाते हैं। आल्हा एक लोकप्रिय गान है। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ होती हैं। स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। उनके गाने के साथ नाच का पुट भी होताहै।

इ. अपने आसपास के क्षेत्र मे प्रचलित किसी लोकगीत का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

उ. (अध्यापक छात्रो से करवाएँ)

ई. लोकगीतों में मुख्यत जनता की मार्मिक भावनाएँ हैं। अपने शब्दों में इसे सिद्ध कीजिए।

उ.

लोकगीत विशेष अवसरों पर गाए जाते है। उन गीतो का मुख्य विषय गाँव के तीज, त्योहार, जन्म रीति रिवाज़ आदि है। इसलिए इनमे जनता की मार्मिक भावनाएँ होती है।इन दे हाती गीतो की रचना कोरी कल्पना पर नहीं होती इनके विषय दैनिक जीवन (रोजमर्रा) से संबध रखते है। इनके राग भी-साधारणत पीयू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठा आदि है। लोकगीत गाँवो और क्षेत्रीय बोलियो में गाए जाते है इसलिए सजीव जान पड़ते है। सभी ऋतुओंमें स्त्रियाँ उल्लासित होकर दल बांधकर गाती है, पर होली,बरसात की कजरी आदि

उनकी अपनी चीज है जो सुनते नही बनती। वास्तव में ये गीत जनता के हृदय से जुड़े होते है इसलिए ये बडे आह्लादकर है।

X. भाषा की बात :

(अ) कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. साधना, त्योहार, देहात (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए)

उ. **वाक्य प्रयोग :**

साधना - नृत्य सीखने के लिए साधना करनी पड़ती है।

त्योहार - होली हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार है।

देहात - देहात के लोग सीधे-सादे होते हैं।

पर्याय शब्द :

साधना - अभ्यास, रियाज़

त्योहार - पर्व, उत्सव

देहात - गाँव, ग्राम

2. **सजीव, परदेशी, शास्त्रीय (एक - एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए)**

विलोम शब्द :

सजीव × निर्जीव

शास्त्रीय × अशास्त्रीय

परदेशी × स्वदेशी

sakshieducation.com

वाक्य प्रयोग :

सजीव - मनुष्य सजीव है और पेड़-पौधे निर्जीव है।

परदेशी - हमेशा परदेशी बुरे नही होते और न स्वदेशी अच्छे होते है।

शास्त्रीय - आजकल शास्त्रीय संगीत को भी अशास्त्रीय बनाया जा रहा है।

3. **यह आदिवासी का संगीत है (वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए)**

उ. ये आदिवासियों के संगीत है।

आ. सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. **लोकगीत, लोकतंत्र (इस तरह 'लोक शब्द से बने दो शब्द लिखिए)**

उ. लोकपाल, लोकसभा

2. **गायक, कवि, लेखक (लिंग बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए)**

उ. 1. गायक - गायिका 2. कवि - कवयित्री 3. लेखक - लेखिका

वाक्य प्रयोग -	पुल्लिंग	स्त्री लिंग
	गायक गीत गाते हैं	गायिका गीत गाती है
	कवि कविता लिखते है।	कवयित्री कविता लिखती है
	लेखक लेख लिखते हैं।	लेखिका लेख लिखती है।

3. **धर्म, मास, दिन, उत्साह (इक प्रत्यय जोड़कर वाक्य प्रयोग कीजिए)**

धर्म + इक = धार्मिक - संक्रांति एक धार्मिक त्योहार है

मास + इक = मासिक - हम मासिक पत्रिका पढ़ते है।

उत्साह + इक = औत्साहिक - युवको को औत्साहिक कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए।

Sakshieducation.com

इ. इन्हे समझिए और अंतर स्पष्ट कीजिए।

1. उपेक्षा - अपेक्षा
2. कृतज्ञ - कृतघ्न
3. बहार - बाहर
4. दावत - दवात

1. उपेक्षा - तिरस्कार - हमे किसी की उपेक्षा नही करनी चाहिए।

उ. अपेक्षा - आशा - हम हमेशा अच्छी चीजों की अपेक्षा करते हैं।

2. कृतज्ञ - आभारी - हम आपके आभारी है।

उ. कृतघ्न - उपकार....न माननेवाला - हमे कृतघ्न नहीं होना चाहिए।

3. बहार - शोभा - बागों में बहार आई है।

उ. बाहर - धूप मे घर के बाहर निकलना ठीक नही है।

4. दावत - निमंत्रण - आज मुझे दावत मे जाना है।

उ. दवात - स्याही रखने का पात्र - मेरी दवात टूट गई।

5. पेड़ पर बड़ा पक्षी है पर उसके छोटे छोटे पर है।

उ. यहाँ 'पर' कारक चिह्न है

'पर' परंतु / लेकिन के अर्थ में

'पर' पंख के अर्थ में

6. हल चलाने मात्र से ही किसान की समस्याएँ हल नही होती।

उ. यहाँ 'हल' खेत जोतने का यंत्र है

'समाधान' के अर्थ में है।

ई. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए / उसके अनुसार दिये गए वाक्य बदलिए।

1. स्त्रियों व्दारा गीत →
- गाए जाते है
- गाये जा रहे हैं
- गाये जा रहे होंगे

गायक के व्दारा लोकगीत गाया जाता है।

अध्यापक के व्दारा पाठ पढ़ाया जाता है।

2. **लोकगीत गाँव का संगीत है।**

उदाहरण : क्या लोकगीत गाँव का संगीत है?

लोकगीत गाँव का संगीत है न।

1. स्त्रियाँ ढ़ोलक की मदद से गाती हैं।
2. लोकगीत के कई प्रकार हैं।

sakshieducation.com